डॉ0 राजविन्दर कौर
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय
सितारगंज
उधम सिहं नगर
(उत्तराखण्ड)
Email-
rajvinderkaur186@gmail.com

विषय	–	हिन्दी
कक्षा	–	कला स्नातक
वर्ष / सेमेस्टर	–	प्रथम वर्ष
प्रश्नपत्र	–	द्वितीय
शीर्षक	–	हिन्दी की उपभाषाएं एवं बोलियां
विचार बिन्दु	–	ब्रजभाषा, भोजपुरी, अवधी, खड़ी बोली

स्वघोषणा–पत्र

यह सामग्री विशेष रूप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है। आर्थिक / वाणिज्यिक एवं किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णतः प्रतिबन्धित है। सामग्री के उपयोगार्थ किसी और के साथ वितरित, पेसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका उपयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगें। इस ई–कण्टेण्ट में जो जानकारी दी गयी है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

उपभाषाएं एवं बोलियां

1 पश्चिमी हिन्दी
- ब्रजभाषा
- कन्नौजी
- खड़ी बोली (कौरवी)
- बुन्दली
- बॉगरू (हरियाणवी)

2 पूर्वी हिन्दी
- अवधी
- छत्तीसगढ़ी
- बघेली

3 बिहारी
- मैथिली
- मगही
- भोजपुरी

4 राजस्थानी
- मेवाती
- मालवी
- मारवाड़ी
- जयपुरी

5 पहाड़ी हिन्दी
- कुमायूँनी
- गढ़वाली
- नेपाली

हिन्दी की प्रमुख बोलियां

आधुनिक भारतीय आर्य भाषा के अंतर्गत हिन्दी की प्रमुख बोलियां अपनी विशेषताओं के आधार पर ख्याति प्राप्त कर रही हैं। प्रत्येक बोली की अपनी–अपनी विशेषता है। यह बोलियां निम्नवत हैं– बिहारी, बंगला, उड़िया, असमिया, पूर्वी, हिन्दी, मराठी, पहाड़ी, सिंधी, लहंदा, पंजाबी, पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी हिन्दी, गुजराती आदि।

खड़ी बोली

खड़ी बोली की गणना पश्चिमी हिन्दी की महत्वपूर्ण बोली के रूप में की जाती है। इस बोली का विशेष महत्व इस कारण से भी है क्योंकि मानक हिन्दी का मूल आधार खड़ी बोली ही है। खड़ी बोली के अन्य नाम हैं– कौरवी और नागरी। खड़ी बोली का क्षेत्र बुन्देलखण्ड और पश्चिमोत्तर उत्तर प्रदेश का क्षेत्र है।

अवधी

यह पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत आती है। अवध की भाषा होने की वजह से यह अवधी कही जाती है। ग्रियर्सन और भोलानाथ तिवारी ने अवधी का सम्बन्ध अर्धमगधी से माना है, जबकि बाबूराम सक्सेना ने पालि से माना है। तुलसीदास की रामचरितमानस और जायसी का पद्मावत इसी बोली की देन है।

ब्रजभाषा

पश्चिमी हिन्दी की सर्वाधिक प्रमुख बोली ब्रजभाषा है जो इसलिए इतनी महत्वपूर्ण हो गई क्योंकि इसका प्रयोग 600 वर्षों तक साहित्य में होता रहा। ब्रजभाषा का क्षेत्र मूलतः ब्रज क्षेत्र है, जिसके अन्तर्गत आगरा, मथुरा, अलीगढ़, एटा, फिरोजाबाद, हाथरस जनपद आते हैं। हिन्दी का पर्याप्त मध्यकालीन साहित्य ब्रजभाषा में लिखा गया है। सूरदास ब्रजभाषा के सर्वप्रथम कवि माने जाते हैं।

भोजपुरी

प्राचीनकाल में भोजपुरी राज्य था, जिसकी राजधानी जिला शाहाबाद के भोजपुर कस्बे में थी। इसी आधार पर यहॉ की बोली का नाम 'भोजपुरी' पड़ा। आजकज भोजपुरी बिहार प्रदेश के शाहाबाद जिले का परगना है। भोजपुरी बोली पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार में बोली जाती है। भोजपुरी में शिष्ट साहित्य बहुत कम लिखा गया किन्तु लोक साहित्य की प्रचुरता है। भोजपुरी बोलने वालों की संख्या डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार तीन करोड़ के आस–पास होगी।

बोधात्मक प्रश्न

- ब्रज तथा खड़ी बोली का सामान्य परिचय दीजिए।
- अवधी तथा भोजपुरी बोली में किसी एक का सामान्य परिचय दीजिए।

संदर्भ सूची

भाषा विज्ञान – डॉ0 भोलानाथ तिवारी, शब्दकार, नई दिल्ली।
हिन्दी भाषा – मिथिलेश कुमार तिवारी, एस बी पी डी पब्लिकेशन्स।

धन्यवाद